रिकॉर्ड :– हमारे तीर्थ न्यारे हैं..... ॐ पिताश्री 24/7/63
ओऽम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। कौन–सा बाप? पारलौकिक परमपिता प०, परमधाम में रहने (वा)ला बाप तो शिव ही है। तुम्हारे पास शिव का चित्र भी बहुत अच्छा है। तुम जानते हो, यह शिवबाबा ही आकर (5) विकार रूपी रावण की ज़जीर से छुड़ाते हैं। पतित कौड़ी मिसल बच्चों को फिर पावन, हीरे मिसल स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इस समय सब नरकवासी अर्थात् नरक के मालिक हैं। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। भारत (में) अभी तक राजाएँ तो हैं ना; परन्तु अपने को प्रिंस–प्रिंसेज कहलाते हैं। राजा–रानी का लकब कौरवों ने छी(न) लिया है। अब अपने को प्रिंस–प्रिंसेज़ कहलाते हैं; परन्तु इस समय के प्रिंस–प्रिंसेज़ यह नहीं जानते कि हम हीरे जैसे थे। अब कौड़ी मिसल बन पड़े हैं; क्योंकि राधे–कृष्ण आदि, जो सतयुगी प्रिंस–प्रिंसेज़ हीरे मिसल थे, उन्हों को कलियुगी प्रिंस–प्रिंसेज माथा झुकाते हैं। तो ज़रूर अब कौड़ी मिसल हैं, वे हीरे मिसल थे तब तो उनको माथा झुकते(झुकाते) हैं ना। कहते भी हैं, भारत हीरे जैसे था, अब कौड़ी जैसा है। किसने ऐसा बनाया, किसने इज्ज़त ली? भारतवासी महान, पवित्र, सर्वगुण सम्पन्न.....देवी–देवताएँ थे। कितने(ना) उन्हों को मान था। कितनी पूजा होती है। उन्हों को बेइज़्ज़त किसने बनाया, यह दुनिया नहीं जानती। इतना बेइज़्ज़त, दुखी बनाया है माया रावण ने। रावण राज्य और राम राज्य प्रसिद्ध है। भारतवासी रावण का अर्थ नहीं समझते। इन्हों को कहा ही जाता है आसुरी दुनिया। सतयुग में है दैवी दुनिया। अपने को कोई असुर मानते नहीं हैं। अब यह बातें तुम बच्चे जानते हो, जिन्हों की बुद्धि हीरे जैसी बनाई जाती है, पहले कौड़ी जैसी थी। गाते भी हैं, हम पतित हैं, पावन बनाओ। अब पावन बनाने वाला तो है ज्ञान सागर। तुम जानते हो, पतित–पावन (की) हम संतान बने हैं पावन बनने लिए। बाप से पवित्रता का वर्सा लेते हैं। अब और मनुष्यों को कैसे समझाया जाय! हैं तो सब पत्थरबुद्धि, उनको पारस बुद्धि कैसे बनावें! बुद्धि हीन अंधों को बुद्धिवान सज्जा कैसे बनावें! डॉक्टर सदा ख्याल (कर)ते रहते हैं कि इस बीमारी से मरीज़ को कैसे छुड़ावे! तुम भी सर्जन हो ना! जो सर्जनरी कहीं सीखते हैं (उनको) तो लल्लू–पंजू ही कहेंगे। जो सर्जन बने हैं, वे तो कहते हैं कि हम तो अविनाशी सर्जन की संतान हैं, हमको यह सर्जनरी अवश्य करनी है। सारा दिन वो विचार करते ....गा, किस प्रकार इनको इंजेक्शन लगावें, किस समय लगावें। समय तो अच्छा है, अमृतवेला और सांय का। अब देखो, बड़े–2 त्योहार आते हैं। रखड़ी बंधन के रहस्य को भी वे तो जानते नहीं। तुम जानते हो, यह है पवित्रता (की) प्रतिज्ञा का कंगन बँधवाना। अब अपवित्र मनुष्यों (को) कैसे सुजान करें! यह बुद्धि में आना चाहिए। यह बातें कोई सभी की बुद्धि में नहीं आतीं। भल कहलाते हैं, हम शिववंशी बी.के. हैं। बाबा ने कहा था, तुम अपने कार्ड भी (छप)वाओ। यह समझानी सर्विसेबल बच्चों के लिए है, जो सर्जनरी का काम करते रहते हैं। जब ऐसे त्योहारों के दिन आते हैं तो सर्जनों को खड़ा होना चाहिए। मनुष्यों को यह पता न है कि पावन दुनिया भी है। भारत पावन है, उसको सतयुग कहा जाता था, अब भारत पतित है। फिर पावन बनने लिए पतित–पावन को पुकारते हैं। इतने (बड़े)–2 विद्वान–पंडित आदि भी गंगा नदी में बैठ स्नान करते हैं। उनके लिए पतित–पावन पानी हो गया। समझते हैं, यह गंगा ही पावन करने वाली है। अच्छा, तब गाँधी कहते थे– पतित–पावन सीता–राम, तो क्या वह झूठ बोलते (थे)! पतित तो हैं मनुष्य। मनुष्य को पावन बनाना, यह तो (परम)पिता प० का ही काम है। ज्ञान बिगर कोई पावन (बन न) सके। ज्ञान से मिलती है सद्गति। अब रखड़ी उत्सव के (दिन) क्या करना चाहिए? पतित–पावन तो है शिवबाबा, उनका चित्र भी है, इसमें लिखत भी अच्छी है। वह बाप आ(कर) पवित्रता की प्रतिज्ञा कराते हैं। कहते भी हैं, गीता के भगवान ने 5 विकारों का दान लिया। तुम हो शिववंशी बी.(के.) तो तुमको शिववंशी बी.के. नाम से कार्ड बनाना चाहिए। न बनाया है, (इ)समें भी कल्याण ही कहेंगे। जिस स.... जो बात न होती है वो कल्याणकारी ही है। तो कार्ड में एक तरफ नाम शिववंशी बी.के. फलानी, दूसरी (ओर) त्रिमूर्ति हो। ब्र०वि०शं० के नीचे लिखत है, ब्रह्मा के नीचे सतयुगी पावन दुनिया की स्थापना, शंकर के नीचे कलियुगी पतित सम्प्रदाय का विनाश, विष्णु के नीचे नई सतयुगी पावन दुनिया की पालना। नीचे में

लिखा हुआ हो, परमपिता प० से अपना वर्सा स्वर्ग की बादशाही का ले लो। ..... कितना (अच्छा) है, कितना इसमें ज्ञान भरा हुआ है। ....। तो ऐसे कार्ड छपे हुए हो। साथ में चित्र भी हो। फिर स.... ले जाना पड़े। तुमको डायरैक्शन मिलते (र)हते हैं। घर बैठे निमंत्रण देना है, पोस्ट में नहीं। बड़े–2 आदमियों को हमेशा घर में जाय, हाथ के निमंत्रण दिया जाता है। वो इज्ज़त है। बाबा ने ..... है काशी में शिव की पूजा होती है। कोई (बनारस में) आकर बैठते हैं मुक्ति पाने, कोई गंगा पर जाकर बैठते हैं। अंधुले–दुंधले तो सभी हैं। अब देखो, शिवानंद मर गया, उनके फॉलोअर्स तो बहुत (हैं)। अच्छा, वो तो चला गया, औरों को साथ कौन .....। गाइड मर पड़े तो .... कौन पहुँचावेगा! मनुष्यों में बुद्धि तो कुछ है नहीं। अभी तुम .... जानते हो गीता का भगवान, जो गाइड है, वो तो सभी आत्माओं को साथ ले जावेंगे। ढेर के ढेर आत्माएँ हैं तो राइटियस पण्डा वो हुआ। गीता का भगवान ही सबको वापिस ले जाते हैं। वो (क्या) जाने, ड्रामा कब पूरा होता है। तुम बच्चे जानते हो सभी को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। सभी आत्माओं में रिकॉर्ड भरा हुआ है। परमपिता प० का भक्तिमार्ग का भी कितना रिकॉर्ड है। ऊपर बैठे–2 सभी की मनोकामना पूरी करते आए हैं आधा कल्प से। उनका पार्ट भी ड्रामा में नुँ(धा) हुआ है। ड्रामा के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता है। नूँधे हुए पार्ट में कोई फेर–वेर हो नहीं सकती। ..... नहीं, प० जो चाहे सो करे। अगर ऐसे हो, तो फिर अच्छे–2 बच्चे, जो सर्विसेबुल हैं, पतित को पावन (बनाते) रहते, उनका शरीर क्यों छूटना चाहिए; परन्तु बाप बतलाते हैं, जो ड्रामा में नूँध है वो ही होना है। (यह) कितनी गुह्य बातें हैं! आत्मा में कैसे रिकार्ड भरा हुआ है। आत्मा स्टार मुआफिक है। कहते भी हैं ..... है अंजन .....। आत्मा कितनी वण्डरफुल है। बाबा की आत्मा में भी पार्ट ..... है। ..... के लिए सुख दे देता हूँ। पत्थर की मूर्ति को ..... यहाँ वो क्या करेगी! श्री ..... है। . ..... है नहीं। भक्तिमार्ग में सभी को भटकना होता है। अभी तुम्हारा भटकरना बंद हो (ग)या है। ..... को भटकने से बचाने वाला बाप है। भटकने से बचाते हैं तो ज़रूर (उनका एवजा) देंगे। ..... ड्रामा, जिसको तुम जानते हो। अभी तुम सब कुछ जान चुके हो। मनुष्य समझते हैं, सभी के दि(लों) को जानते हैं, विराजमान है; परन्तु ईश्वर तो विराजमान नहीं है; विराजमान तो (5) विकार रहते हैं। अब ऐसे पतितों को पावन (बना)ना तुम सर्जनों का काम है। बाप हमेशा (सुपूत) बच्चे को ही पसंद करेंगे। वो दिल पर चढ़े रहते हैं। कुपूत तो दिल में दुख देंगे। अवज्ञा कर नाम बदनाम करेंगे। सुपूत बच्चे बापदादा को राज़ी ..... हैं। शिवबाबा कितने पतितों को पावन बनाते हैं। जैसे बाप नॉलेजफुल वैसे बच्चे। सारी सृष्टि की हिस्ट्री–जॉग्राफी बताते हैं। वो है हद की हिस्ट्री–जॉग्राफी, यह है बेहद की, जो और कोई नहीं जा(नते)। सतयुग की आयु कितनी लम्बी बता दी है। जानते ही नहीं, सतयुग में किसने राज्य किया। ....चला। राम राज्य के लिए भी कहते हैं– राम राजा, राम प्रजा, धर्म का उपकार है, फिर ..... राम की सीता चुराई गई। यह हैं सभी झू(ठी) बातें। धर्म की ग्लानि के यह सभी शास्त्र हैं। .... शास्त्र पढ़ने से ही मनुष्य अधर्मी बने हैं। पढ़ते हैं कृष्ण को 16108 राणियाँ थीं तो कहते हमने ..... रखीं तो क्या हुआ! शास्त्रों से ही भारतवासी (नर्क)वासी बने हैं। अब उन्हों को स्वर्गवासी बनाने क्या करना चाहिए? रखड़ी उत्सव आता है। तो ..... (रखना) पड़े। शिव का चित्र हाथ में रखना है। ..... है अच्छा। शिवबाबा ....है। फिर लिखा हुआ है, बेहद के बाप से वर्सा लेना है तो ज़रूर पवित्र बनना पड़े सदा ही। ..... कार्ड और शिव का वा त्रिमूर्ति का चित्र देना चाहिए। काशी में बहुत शिव के पुजारी हैं

(अधूरी मुरली)